वेयणाअप्पाबहुगाणुयोगद्दारं

वेयणाअप्पाबहुए त्ति।।१।।

वेदनाअल्पबहुत्वका अधिकार है।।१।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति -- पयडिअट्ठदा समयपबद्धट्ठदा खेत्तपच्चासए त्ति।।२।।

उसमें ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं -- प्रकृत्यर्थता, समयप्रबद्धार्थता और क्षेत्रप्रत्यास।।२।।

एवं तिण्णि चेव एत्थ अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो।

इस प्रकार यहाँ तीन ही अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि, इनसे अन्य अनुयोगद्वारोंकी यहाँ सम्भावना नहीं है।

पयडिअट्ठदाए सव्वत्थोवा गोदस्स कम्मस्स पयडीओ।।३।।

प्रकृत्यर्थताकी अपेक्षा गात्र कर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं।।३।।

कुदो? दोपरिमाणत्तादो (* अ आ का प्रतिषु 'कुदो परिमाणत्तादो' इति पाठः।) ।

क्योंकि, वे दो अंक प्रमाण हैं।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ तत्तियाओ (* अ आ का प्रतिषु 'तत्तियो' इति पाठः।) चेव।।४।।

वेदनीय कर्मकी भी उतनी ही प्रकृतियाँ हैं।।४।।

सादासादभेएण दुब्भावुवलंभादो।

क्योंकि, साता व असाताके भेदसे उनकी भी दो संख्या पायी जाती है।

आउअस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ।।५।।

आयु कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं।।५।।

को गुणगारो? दो रूवाणि।

गुणकार क्या है? गुणकार दोका अंक है।

अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।६।।

अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।६।।

केत्तियमेत्तेण? सगचदुब्भागमेत्तेण।

कितने मात्रसे वे अधिक हैं? वे अपने चतुर्थ मात्र भागसे अधिक हैं।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ।।७।।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं।।७।।

को गुणगारो? बे-पंचभागूणछरूवाणि।

गुणकार क्या है? गुणकार दो बटे पाँच (२/५) भागसे कम छह अंक है (५x५ ३/५=२८) ।

णामस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।८।।

नाम कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।८।।

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा।

यहाँ गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ।।९।।

दर्शनावरणीयकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।९।।

एत्थ वि गुणगारो असंखेज्जा लोगा।

यहाँ भी गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।१०।।

ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।१०।।

केत्तियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जा कप्पा। एवं पगदिअट्ठदा समत्ता।

विशेष कितना है? वह असंख्यात कल्पप्रमाण है। इस प्रकार प्रकृत्यर्थता समाप्त हुई।

समयपबद्धट्ठदाए सव्वत्थोवा आउअस्स कम्मस्स पयडीओ ।।११।।

समयप्रबद्धार्थताकी अपेक्षा आयुकर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं।।११।।

कुदो? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो।

क्योंकि वे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण हैं।

गोदस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।१२।।

गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।१२।।

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

गुणकार क्या है? वह पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।१३।।

वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।१३।।

केत्तियमेत्तो विसेसो? पण्णारससागरोवमकोडाकोडीओ।

विशेषका प्रमाण कितना है? उसका प्रमाण पन्द्रह कोड़ाकोड़ी सागरोपम है।।

अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ।।१४।।

अन्तरराय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं।।१४।।

को गुणगारो? सादिरेयतिण्णिरूवाणि।

गुणकार क्या है? गुणकार साधिक तीन अंक है।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ।।१५।।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं।।१५।।

एत्थ गुणगारो संखेज्जा समया।

यहाँ गुणकार संख्यात समय है।

णामस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ (* अ आ का प्रतिषु 'संखेज्ज', ता प्रतौ '(अ)संखेज्ज' इति पाठः।)।।१६।।

नामकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।१६।।

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

गुणकार क्या है? गुणकार असंख्यात लोक है।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।१७।।

दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।१७।।

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

गुणकार क्या है? गुणकार असंख्यात लोक हैं।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।१८।।

ज्ञानावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।१८।।

केत्तियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जा कप्पा। एवं समयपबद्धट्ठदा त्ति समत्ता।

विशेष कितना है? वह असंख्यात कल्पोंप्रमाण है। इस प्रकार समयप्रबद्धार्थता समाप्त हुई।

खेत्तपच्चासए त्ति सव्वत्थोवा अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ ।।१९।।

क्षेत्रप्रत्यासकी अपेक्षा अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं।।१९।।

कुदो? पंचगुणतीससागरोवमकोडाकोडिगुणिदमहामच्छुक्कस्सखेत्तपमाणत्तादो।

क्योंकि वे पाँच गुणे तीस (३० x ५) कोड़ाकोड़ी सागरोपमोंसे गुणित महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रके बराबर हैं।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ।।२०।।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं।।२०।।

कुदो? णवसयपंचाणउदिसागरोवमकोडाकोडीहि गुणिदमहामच्छुक्कस्सखेत्तमेत्तपयडित्तादो। को गुणगारो? सादिरेयछरूवाणि।

कारण कि वे प्रकृतियाँ नो सो पंचानवे कोड़ाकोड़ी सागरोपमोंसे गुणित महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रके बराबर हैं। गुणकार क्या है? गुणकार क्या है? गुणकार साधिक छह अंक है।

आउअस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।२१।।

आयु कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।२१।।

कुदो? अंतोमुहुत्तगुणिदघणलोगपमाणत्तादो। को गुणगारो? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो।

क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्तसे गुणित घनलोकप्रमाण हैं। गुणकार क्या है? वह जगप्रतरका असंख्यातवाँ भाग है।

गोदस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।२२।।

गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।२२।।

को गुणगारो? अंतोमुहुत्तोवट्टिदतीससागरोवमकोडाकोडीओ।

गुणकार क्या है? गुणकार अन्तर्मुहूर्तसे अपवर्तित तीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम है।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।२३।।

वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।२३।।

केत्तियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जलोगमेत्तो।

विशेष कितना है? वह असंख्यात लोकप्रमाण है।

णामस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।२४।।

नामकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।२४।।

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

गुणकार क्या है? गुणकार असंख्यात लोक हैं।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।।२५।।

दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं।।२५।।

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

गुणकार क्या है? गुणकार असंख्यात लोक है।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ।।२६।।

ज्ञानावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं।।२६।।

केत्तियमेत्तो विसेसो? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। एवं खेत्तपच्चासो समत्तो।

विशेष कितना है? वह प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इस प्रकार क्षेत्रप्रत्यास समाप्त हुआ।

एवं वेयणाअप्पाबहुगाणुओगद्दारे समत्ते वेयणाखंडो समत्तो (* प्रतिषु 'वेयणाखंड समत्ता' इति पाठः। ततश्च निम्नपाठः उपलभ्यते -- "णमो णाणाराहणाए, णमो दंसणाराहणाए, णमो चरित्ताराहणाए, णमो तवाराहणाए, णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो भयवदो महदिमहावीरवड्ढमाणबुद्धरिसिस्स, णमो भयवदो गोदमसामिस्स, नमः सकलविमलकेवलज्ञानावभासिने, नमो वीतरागाय महात्मने, नमो वर्द्धमानभट्टारकाय। वेदनाखण्डं समाप्तम्। अबोधे बोधं यो जनयति सदा शिष्यकुमुदे, प्रभूय प्रह्लादी दुरितपरितापोपशमनः। तपोवृत्तिर्यस्य स्फुरति जगदानन्दजननी, जिनध्यासासक्तो जगति कुलचन्द्रो मुनिरयम्। नमः सिद्धेभ्यः।।"

इस प्रकार वेदनाअल्पबहुत्व अनुद्वारके समाप्त होनेपर वेदनाखण्ड समाप्त हुआ।